अध्ययन सामग्री

बी॰ ए॰ (संस्कृत) पार्ट 3
प्रश्नपत्र – षष्ठ
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
आरा (बी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰)

29.05.20

समास

समास का अर्थ होता है संक्षेपण। इसीलिए कहा गया है – 'समसनं समासः'। अनेक पदों का एक बन जाना समसन होता है। 'अनेकपदानाम् एकपदी भावः समासः'। समास के द्वारा पदसमूह की विभक्तियाँ हटाकर छोटा कर लिया जाता है, जिससे श्रम लाघव होता है। लाघव का व्याकरणशास्त्र में बहुत महत्त्व है। लाघव के महत्त्व को इंगित करके कहा गया है –

'अर्धमात्रालाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः'

समास शब्द सम् उपसर्गपूर्वक अस् धातु से व्युत्पन्न होता है।

समास करने के बाद विभक्तियों का लोप करने से जिन पदों का समास किया जाता है, वे मिलकर एकपद में ही परिवर्तित हो जाते हैं और अन्त में ही विभक्ति आती है। अतः संक्षेपण या लाघव की दृष्टि से समास का बहुत महत्त्व है।

यथा – नराणां पतिः – नरपतिः

यहाँ 'नरपतिः' का वही अर्थ है जो 'नराणां पतिः' का है, परन्तु दोनों शब्दों को मिला देने से 'नराणां' शब्द के विभक्ति सूचक प्रत्यय (आणाम्) का लोप हो गया और

Scanned by CamScanner

'नरपतिः' शब्द 'नराणां पतिः' से छोटा हो गया।

विग्रह — इसका लक्षण करते हुए कहा गया है —
'वृत्त्यर्थबोधकं वाक्यं विग्रहः'
अर्थात् वृत्त्यर्थ को समझाने वाला वाक्य विग्रह कहलाता है।
वृत्तियाँ पाँच हैं — कृत्, तद्धित, समास, एकशेष एवं सनाद्यन्त धातु रूप।
विग्रह लौकिक तथा अलौकिक भेद से दो प्रकार का होता है।
लोक में जो व्यवहार योग्य होता है उसे लौकिक विग्रह कहते हैं — जैसे - 'राजपुरुषः' इस समास का लौकिक विग्रह 'राज्ञः पुरुषः' है, क्योंकि यही परिनिष्ठित रूप लोक व्यवहार के योग्य होता है।
इसी 'राजपुरुषः' का जब 'राजन् ङस् पुरुष सु' इस रूप में विग्रह किया जाता है तो यह अलौकिक विग्रह कहलाता है, क्योंकि यह विग्रह केवल साधनिका के लिए ही उपयोगी है, लोक-व्यवहार के योग्य नहीं।

समास के भेद — समास के पाँच भेद स्वीकार किये गये हैं —
1) केवल समास 2) अव्ययीभाव समास
3) तत्पुरुष समास 4) बहुव्रीहि समास 5) द्वन्द्व समास

इसीलिए कहा गया है —
'केवलश्चाऽव्ययीभावो द्वन्द्वस्तत्पुरुषस्तथा।
बहुव्रीहिश्च विज्ञेयः समासः पञ्चधा बुधैः॥'

Scanned by CamScanner

1) केवल समास — वह समास विशेष नाम से रहित

केवल समास नामक प्रथम है अर्थात् जिस समास का कोई विशेष नाम नहीं कहा गया, उसे 'केवल समास' कहते हैं, यह समास का पहला प्रकार है।

जैसे - भूतपूर्वः (जो पहले हो चुका)

यहाँ 'सह सुपा' से समास हुआ है। वह किसी विशेष समास के अधिकार में नहीं है, इसीलिए 'केवल समास' है।

2) अव्ययीभाव समास — प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावो द्वितीयः

जिसमें प्रायः पूर्व पद के अर्थ की ही प्रधानता हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें समस्त शब्द का प्रथम पद अव्यय होता है। यह समास का दूसरा भेद है।

प्रधानता का निर्णय अग्रिम पदार्थ से अन्वय के द्वारा किया जाता है। जिस अर्थ का अन्वय अग्रिम पदार्थ के साथ होगा, वह प्रधान माना जाएगा।

जैसे - अधिहरि (हरि में) — यहाँ पूर्व पद 'अधि' का अर्थ 'में' प्रधान है, क्योंकि उसी का अन्य पदार्थ के साथ अन्वय होता है, इसीलिए यह अव्ययीभाव समास है।

प्रायः कहने से 'उन्मत्तगङ्गम्' — 'उन्मत्ता गङ्गा यत्र स उन्मत्तगङ्गो नाम देशः' — जहाँ गङ्गा उन्मत्त है वह उन्मत्तगङ्ग नाम देश है — यहाँ उन्मत्तगङ्ग में पूर्व पद का अर्थ प्रधान नहीं, अपितु देश रूप अन्य पद का अर्थ प्रधान है, पर अव्ययीभाव के अधिकार में होने के कारण यह भी अव्ययीभाव समास है। 'प्रायेण' यदि न कहा जाय, तो इसकी अव्ययीभाव संज्ञा नहीं होगी।

Scanned by CamScanner

3) तत्पुरुष समास – प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषस्तृतीयः

जिसमें प्रायः उत्तर पद का अर्थ प्रधान हो, वह तत्पुरुष समास कहा जाता है। यह समास का तीसरा भेद है। जैसे -

गङ्गायाः जलम् – गङ्गाजलम्

वक्ता के 'गङ्गाजलम् आनय' इस वाक्य से जल लाने के आदेश का बोध होता है, न कि गङ्गा को लाने का। इसलिए उत्तर पद (जलम्) की प्रधानता के कारण यह तत्पुरुष हुआ।

प्रायः कहने से 'पञ्चानां तन्त्राणां समाहारः – पाँच तन्त्रों का समाहार'। इस समाहार अर्थ में भी तत्पुरुष समास हो जाता है। अन्यथा समाहार अन्य पद का अर्थ है, उत्तर पद का अर्थ नहीं। अतः यहाँ तत्पुरुष समास नहीं होता। 'प्रायेण' कहने से इसकी भी तत्पुरुष संज्ञा हो जाती है।

तत्पुरुष समास का एक भेद 'कर्मधारय' है। इसमें विशेष्य एवं विशेषण में समास होता है। यह तत्पुरुष का ही विशेष प्रकार है, क्योंकि यहाँ उत्तर पद का अर्थ प्रधान होता है।

जैसे – नीलोत्पलम् (नीलं च तत् उत्पलं च = नीला कमल)

यहाँ 'नील' विशेष्य और 'उत्पल' विशेषण का समास होता है। अतः यह कर्मधारय समास है।

कर्मधारय का एक प्रकार द्विगु है। इसमें संख्यावाचक विशेषण और विशेष्य में समास होता है।

जैसे – पञ्चगवम् – पञ्चानां गवां समाहारः – पाँच गौओं का समाहार – यहाँ विशेषण 'पञ्च' संख्यावाचक है, इसलिए यह द्विगु समास है।

Scanned by CamScanner

4) बहुव्रीहि — प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिश्चतुर्थः

जिस समास में प्रायः अन्य पद (न पूर्व पद और न उत्तर पद) का अर्थ प्रधान हो, वह 'बहुव्रीहि' होता है, यह चौथा समास है।

बहुव्रीहि का अर्थ है — बहुव्रीहिः (धान्यम्) यस्य अस्ति सः बहुव्रीहिः।

यहाँ प्रथम शब्द (बहु) दूसरे शब्द (व्रीहि) का विशेषण है और दोनों ही शब्द किसी तीसरे शब्द के विशेषण हो गए। अतएव इसका नाम 'बहुव्रीहि' पड़ा।

यथा — पीताम्बरः — पीतम् अम्बरं यस्य सः (जिसका पीला वस्त्र हो अर्थात् श्रीकृष्ण)

यहाँ पीतम् और अम्बरम् — इन दोनों से भिन्न व्यक्ति अर्थ प्रधान है। अतः अन्य पदार्थ (व्यक्ति) की प्रधानता के कारण यह 'बहुव्रीहि' समास है।

'प्रायेण' कहने का फल यह है कि बहुव्रीहि के अधिकार में आये हुए कुछ 'द्वित्राः' (दो या तीन) आदि समास भी 'बहुव्रीहि' कहे जाते हैं, अन्यथा उभय पदार्थ प्रधान होने के कारण इसे 'बहुव्रीहि' नहीं कहा जा सकेगा। उभय पदार्थ प्रधान होने के कारण यह 'द्वन्द्व' होगा।

तत्पुरुष और बहुव्रीहि में भेद — तत्पुरुष में प्रथम शब्द दूसरे शब्द का विशेषण होता है, यथा — पीतम् अम्बरम् — पीताम्बरम् (पीला वस्त्र) — कर्मधारय समास

बहुव्रीहि में दोनों शब्द मिलकर किसी तीसरे शब्द के विशेषण होते हैं, यथा — पीताम्बरः —

पीतम् अम्बरं यस्य सः (जिसका पीला वस्त्र हो अर्थात् श्रीकृष्ण)

बहुव्रीहि समास में समास के दोनों शब्दों में से किसी में प्रधानत्व नहीं रहता, दोनों मिलकर किसी तीसरे का प्रधानत्व सूचित करते हैं।

Scanned by CamScanner

5) द्वन्द्व — प्रायेणोभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः पञ्चमः ।
जिस समास में प्रायः दोनों पदों का अर्थ प्रधान हो, वह समास का पाँचवाँ भेद 'द्वन्द्व' समास है ।
यथा — रामलक्ष्मणौ (राम और लक्ष्मण)
यहाँ दोनों पदों का अर्थ प्रधान होने से 'द्वन्द्व' समास है ।
'प्रायेण' कहने से समाहार द्वन्द्व में समाहार अर्थ के अन्य पदार्थ होने पर भी यह समास हो जाता है।
इन पाँच समासों में बहुव्रीहि और द्वन्द्व अनेक पदों के भी होते हैं, शेष दो-दो पदों के होते हैं ।
निम्न श्लोक में समासों के विग्रह का स्वरूप निर्दिष्ट है —
चकारबहुलो द्वन्द्वः, स चासौ कर्मधारयः ।
यस्य येषां बहुव्रीहिः, शेषस्तत्पुरुषो मतः ॥
अर्थात् जिस विग्रह में अनेक च का प्रयोग हो, वह 'द्वन्द्व' है, जिसमें 'स चासौ' विग्रह हो, वह 'कर्मधारय' है जिसमें 'यस्य' अथवा 'येषां' विग्रह हो, वह बहुव्रीहि है तथा इनसे शेष समास तत्पुरुष है ।
निम्न श्लोक में समासों का नाम निर्देश पूर्वक धन प्राप्ति की कामना की गई है —
द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः ।
तत्पुरुष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः ॥
एक गरीब व्यक्ति राजा के पास याचक रूप में गया, राजा शीघ्रता में था अतः उसने कहा कि 'समासेन कथय' अर्थात् समास यानि संक्षेप में कहो । वह गरीब व्यक्ति बोला — द्वन्द्वो द्विगुरपि अर्थात् मैं द्वन्द्व (जोड़ा) यानि पति-पत्नी हूँ तथा मेरे पास केवल दो गायें (द्विगुः) हैं । मेरे घर में सदा अव्ययीभाव है अर्थात् धन की कमी के कारण नित्य खर्च का अभाव है, इसलिए हे पुरुष राजन (तत्पुरुष)! ऐसा कार्य करो (कर्मधारय) जिससे मैं बहुधान्यधान्य सम्पन्न (बहुव्रीहि) हो जाऊँ ।

Scanned by CamScanner